

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 23, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट, भाग 3

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 23 है, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट, भाग 3।

तो, हम डी, व्याख्यान संख्या 16, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट पर हैं, और हम डी, मसीह और संस्कृति पर हैं।

ठीक है, यहाँ सिर्फ एक बात याद दिलाना है कि हम कहाँ हैं। नियो-ऑर्थोडॉक्सी, यह यूरोपीय आंदोलन है जो अमेरिका में आया, जिसका नेतृत्व नीबूर बंधुओं जैसे लोगों ने किया, लेकिन नियो-ऑर्थोडॉक्सी एक ऐसा आंदोलन था जिसने अमेरिकी जीवन के व्यापक मध्य को देखा और महसूस किया कि इसे चुनौती नहीं दी जा रही है। इसने देखा कि बाईं ओर एक तरह का शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद था, जो एक तरह से दिवालिया हो गया था।

आपको याद होगा कि हमने एच. रिचर्ड नीबूर से किंगडम ऑफ गॉड इन अमेरिका से उद्धरण दिया था, लेकिन दाईं ओर एक तरह का अमेरिकी कट्टरवाद था, जिसे हम देखेंगे कि वह धारणा सही थी या नहीं, लेकिन फिर भी, इसे एक तरह का बौद्धिक-विरोधी, एक तरह का भावनात्मक आंदोलन माना जाता था, और बीच के लोगों, प्रोटेस्टेंट के व्यापक मध्य में, के पास टिकने के लिए कुछ भी नहीं था, और नव-रूढ़िवादी उन्हें आकर्षित करते हैं, क्योंकि यह एक बहुत मजबूत, बाइबिल-आधारित आंदोलन है, जो बाइबिल को मुख्य रूप से सुधार की आंखों से, मुख्य रूप से केल्विन की आंखों से देखता है, लेकिन यह एक बहुत ही बौद्धिक आंदोलन भी था। यह एक ऐसा आंदोलन था जो वास्तव में दर्शन और कला और संस्कृति और आधुनिक दुनिया और आधुनिकता द्वारा लाई गई सभी समस्याओं, राजनीति, सामाजिक निर्माण, और इसी तरह से जूझ सकता था, इसलिए यह एक बहुत ही बौद्धिक लेकिन शक्तिशाली बौद्धिक आंदोलन था, और इसलिए यह दृश्य पर आता है और अमेरिकी ईसाई धर्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से नीबूर के माध्यम से, जैसा कि हमने उल्लेख किया है। ठीक है, सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है क्राइस्ट एंड कल्चर।

आप में से कुछ लोगों ने क्राइस्ट एंड कल्चर के कुछ हिस्सों को दूसरे कोर्स में पढ़ा होगा, या कुछ लोगों ने क्राइस्ट एंड कल्चर के कुछ हिस्सों को दूसरे कोर्स में पढ़ा होगा। हमने दूसरे दिन एक परिचय दिया था, बस किताब और किताब के संदर्भ और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में याद दिलाने के लिए, और जब एच. रिचर्ड नीबूर मसीह, अवतार मसीह के बारे में बात करते हैं। वह देहधारी ईश्वर के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन वह देहधारी ईश्वर के बारे में भगवान के रूप में बात कर रहे हैं जो इस दुनिया में एक राज्य की वास्तविकता लेकर आए और इतिहास के भगवान हैं, इसलिए देहधारी ईश्वर के बहुत सारे आयाम हैं।

आप बाइबिल की कथा का गहराई से अध्ययन करके मसीह के बारे में सब कुछ जान सकते हैं, और फिर संस्कृति से उनका मतलब है कि हम प्राकृतिक दुनिया में सामाजिक वास्तविकता बनाने के लिए क्या करते हैं, और यह राजनीति हो सकती है, यह कला हो सकती है, यह विज्ञान हो सकता है, यह वास्तुकला हो सकती है, यह संस्कृति को बनाने और आकार देने में मदद करती है, इसलिए बहुत सी चीजें, आप जानते हैं, संस्कृति को आकार दे सकती हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। नैतिकता संस्कृति को आकार देने में मदद करती है। एक बात जिसका हमने उल्लेख किया, मुझे लगता है, दूसरे दिन निष्कर्ष पर भाषा थी।

भाषा संस्कृति है, जैसा कि मेरे एक प्रोफेसर ने कई बार कहा था, लेकिन अगर आपको लोगों की भाषा आती है, तो आप उनकी संस्कृति को भी समझ सकते हैं क्योंकि भाषा उस सांस्कृतिक वास्तविकता को आकार देने में मदद करती है, इसलिए भाषा वास्तव में संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए, क्राइस्ट एंड कल्चर में, हमने उल्लेख किया कि वह पाँच मॉडल देता है। हम उनमें से तीन मॉडल लेने जा रहे हैं, एक तरफ एक, दूसरी तरफ एक और बीच में तीन, लेकिन मैं उन तीनों को लेकर एक में ले जाने की ओर बढ़ गया हूँ, इसलिए मुझे लगता है कि हमने यहीं से शुरुआत की थी।

चलिए यहाँ आगे बढ़ते हैं। आपकी रूपरेखा में दूसरा नंबर मसीह और संस्कृति के बीच विरोध है, मसीह और संस्कृति के बीच विरोध। ठीक है, अब, मसीह और संस्कृति के बीच विरोध की यह स्थिति कौन रखता है? खैर, वे लोग जो अपने व्यक्तिगत जीवन में, अपने सामूहिक जीवन में, और अपने सामुदायिक जीवन में मसीह के एकमात्र अधिकार की पुष्टि करना चाहते हैं।

वे यह पुष्टि करना चाहते हैं कि मसीह के पास एकमात्र और एकमात्र अधिकार है। कोई अन्य अधिकार नहीं है जिसके सामने हमें घुटने टेकने की आवश्यकता हो, इत्यादि। इसलिए, संस्कृति का हमारी वफ़ादारी पर कोई दावा नहीं है।

जो लोग इस स्थिति को मानते हैं, मसीह और संस्कृति का विरोध करते हैं, वे कहते हैं कि संस्कृति का हमारी वफ़ादारी पर कोई दावा नहीं है। केवल मसीह का ही हमारी वफ़ादारी पर दावा है, और इसलिए मसीह द्वारा आकार दिया गया ईसाई धर्म सांस्कृतिक ईसाई धर्म नहीं है, बल्कि मसीह द्वारा आकार दिया गया ईसाई धर्म एक नई व्यवस्था है। यह एक नया राज्य है।

यह एक नई दुनिया है, और हमारी एकमात्र वफ़ादारी उस नई व्यवस्था, उस नए राज्य और उस नई दुनिया के प्रति है। हम जिस संस्कृति में खुद को पाते हैं, उसके प्रति हमारी कोई वफ़ादारी नहीं है। अब, जो लोग मसीह और संस्कृति के बीच विरोध में विश्वास करते हैं, वे बाइबल खोलते हैं, और जब वे बाइबल खोलते हैं, तो उन्हें बाइबल में जो मिलता है वह दुनिया से अलग होने और आने का एक क्रांतिकारी आह्वान है।

वे बाइबल, उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक पढ़ते हैं, और वे विशेष रूप से यीशु के वचनों को पढ़ते हैं, और उन्हें लगता है कि यह दुनिया को छोड़ने, एक पतित दुनिया को छोड़ने और उसका अनुसरण करने, और केवल उसका अनुसरण करने के लिए एक क्रांतिकारी आह्वान है।

इसलिए, यहाँ कट्टरपंथी शब्द बहुत महत्वपूर्ण है, चीजों की जड़ तक पहुँचना। मसीह का यह आह्वान कि दुनिया का हिस्सा न बनो, भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें, और नए राज्य का हिस्सा न बनो, वास्तव में एक क्रांतिकारी आह्वान है, और कोई भी सच्चा शिष्य उस आह्वान का पालन करने जा रहा है।

कोई भी सच्चा शिष्य उस आह्वान पर ध्यान देगा। तो अब, कभी-कभी मसीह और संस्कृति के बीच विरोध, कभी-कभी, लेकिन हमेशा नहीं, लेकिन कभी-कभी इसमें एक बहुत ही गतिशील प्रकार का युगांतशास्त्र शामिल होता है, और कभी-कभी मिश्रण में एक विश्वास होता है कि हम अंत के समय में रह रहे हैं, कि दुनिया का अंत हमारे ऊपर है, और उस अंत के समय में जिसमें हम रहते हैं, तब सभी सांस्कृतिक वास्तविकताएँ वैसे भी समाप्त हो जाएँगी, और केवल एक चीज़ जो बची रहेगी वह है एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी। तो कभी-कभी, मसीह और संस्कृति के लोगों के बीच विरोध में एक बहुत मजबूत युगांतशास्त्रीय तनाव होता है।

इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारी अंतिम निष्ठा संस्कृति के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए है क्योंकि संस्कृति गुज़र रही है। कोई भी संस्कृति गुज़र रही है, और कोई भी संस्कृति अंततः इस युगांतिक आयाम में परमेश्वर के न्याय के अधीन होगी। अब, सभी विपक्षी लोग युगांतिक रूप से सोच रखने वाले नहीं हैं, लेकिन उनमें से कुछ लोग महसूस करते हैं कि वे नए नियम में जो सच था उसका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, कि नए नियम के विश्वासियों ने वास्तव में यीशु के आसन्न दूसरे आगमन पर विश्वास किया और अपने जीवन को उस तरह के कट्टरपंथी तरीके से संचालित किया।

खैर, अगर हम उस तरह की परलोकवादी वास्तविकता में जी रहे हैं, तो हमें भी अपने जीवन को उसी तरह से जीना चाहिए जैसे आदिम चर्च ने अपने जीवन को जीया था, किसी भी संस्कृति के प्रति निष्ठा नहीं रखते हुए, केवल मसीह और उसके राज्य के प्रति निष्ठा रखते हुए। अब, कुछ लोगों के लिए, सभी के लिए नहीं, लेकिन इनमें से कुछ लोगों के लिए, मनुष्य द्वारा स्थापित संस्थाएँ बुरी और वास्तव में विकृत हैं। इसलिए, कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें त्याग दिया जाना चाहिए, व्यापक संस्कृति में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनसे आप कोई लेना-देना नहीं रखने की कोशिश करते हैं।

तो मैं उनमें से कुछ का ज़िक्र करना चाहूँगा, जो कि वास्तविकता है, लेकिन उदाहरण के लिए, राजनीतिक जीवन, संस्कृति का राजनीतिक और सामाजिक जीवन त्याग दिया जाना चाहिए। आपका उस राजनीतिक या सामाजिक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए, राजनीति मायने नहीं रखती।

राजनीति लगभग समाप्त हो चुकी है। तो यह एक उदाहरण है। सैन्य जीवन से परहेज किया जाता है।

कई बार, जो लोग मसीह और संस्कृति के बीच विरोध में हैं, वे शांतिवादी हैं, और वे किसी भी सैन्य में भाग नहीं लेंगे। यह सैन्य प्रतिष्ठान एक दुष्ट संस्कृति द्वारा स्थापित एक पतित और दुष्ट प्रतिष्ठान है। इसलिए उनका इससे कोई लेना-देना नहीं होगा; वे उस सैन्य जीवन से दूर रहेंगे।

दर्शनशास्त्र से जुड़ी किसी भी चीज़ को सोच के मानवीय निर्माण के रूप में देखा जाता है जो कि किया गया है। मेरा मतलब है, इससे परहेज़ किया जाता है। आपकी मुख्य निष्ठा बाइबल और यीशु की शिक्षाओं के प्रति है, न कि अरस्तू या एकिनास या उस जैसी किसी चीज़ के प्रति।

अक्सर, कला से जुड़ी किसी भी चीज़ को इसलिए नकार दिया जाता है क्योंकि कलात्मक दुनिया किसकी अभिव्यक्ति है? यह एक गिरी हुई संस्कृति की अभिव्यक्ति है। और इसलिए, आपको कलात्मक दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। और यह एक तरह से बाहर की बात है।

तो, मसीह और संस्कृति के बीच विरोध है। अब, नीबूर कुछ ऐसे लोगों के उदाहरण देते हैं जो ऐसा मानते हैं। मैं कुछ उदाहरण देने जा रहा हूँ।

एक जो उन्होंने दिया और एक जिसका उन्होंने उल्लेख किया, लेकिन यह हमारे लिए और हमारे पाठ्यक्रम के लिए वास्तव में एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। तो, मैं वह भी दूंगा। ठीक है।

एक उदाहरण जिसके बारे में वह स्पष्ट रूप से बहुत बात करते हैं वह है मठवाद। मठवाद एक ऐसा आंदोलन है जो ऐतिहासिक रूप से, कभी-कभी मसीह और संस्कृति आंदोलन का विरोध करता था। मठवाद की शुरुआत सिर्फ व्यक्तिगत भिक्षुओं से हुई और फिर यह दूसरी और तीसरी सदी में एक सामुदायिक आंदोलन में बदल गया।

लेकिन यह संस्कृति के साथ जितना संभव हो सके उतना दूर चला गया, और पूरी निष्ठा केवल मसीह के प्रति थी। शुरुआती भिक्षु, बेशक, गुफा में अकेले रहते थे, और वे गुफा में बैठकर अपना सारा जीवन चिंतन में बिताते थे। उनका संस्कृति से कोई लेना-देना नहीं था।

उन्हें उनके शिष्यों द्वारा मुश्किल से जीवित रखा जाता था, जो भोजन रखते थे। कभी-कभी, आपको शिमोन स्टाइलाइट्स मिल जाते हैं। क्या आपने अपने पाठ्यक्रम में शिमोन स्टाइलाइट्स के बारे में बात की है? शिमोन स्टाइलाइट्स शुरुआती मिस्र के भिक्षुओं में से एक थे।

मुझे लगता है कि वह मिस्र या सीरिया में था। वहाँ एक खंभा था, और वह उस पर चढ़ गया। अपने जीवन के बाकी समय में, वह उस खंभे के ऊपर एक छोटी सी जगह में रहा, जहाँ वह रहता था। सारा पोषण और सब कुछ शिष्यों द्वारा किया जाता था।

लेकिन वह एक चिंतनशील भिक्षु थे, और वह संस्कृति से बिल्कुल दूर थे। बहुत से व्यक्तिगत भिक्षु और फिर बहुत से प्रारंभिक समुदाय मसीह और संस्कृति के विरोधी थे। बहुत पहले पाठ्यक्रम में, मैंने ट्रैपिस्ट मठ की अपनी यात्रा का उल्लेख किया था।

याद रखें कि हम बार्डस्टाउन, केंटकी के बारे में बात कर रहे थे, और यह रोमन कैथोलिक धर्म के लिए कितना महत्वपूर्ण था। ट्रैपिस्ट मठ की यात्रा, एक तरह से, मसीह और संस्कृति के अनुभव के बीच विरोध थी क्योंकि ट्रैपिस्ट भिक्षुओं ने गरीबी की शपथ ली थी, और मठ के मठाधीश ने उनमें से कुछ को हमसे बात करने की अनुमति दी ताकि उनमें से कुछ हमारे साथ संवाद कर सकें। लेकिन वे गरीबी की शपथ लिए हुए थे, और उनमें से प्रत्येक एक बिस्तर, एक कुर्सी और

एक छोटी सी शेल्फ के साथ सिर्फ एक कोठरी में रहता था जिसमें उनकी सारी सांसारिक चीजें रखी जाती थीं।

उनके पास जो कुछ भी था, वह सब वहाँ था, और फिर उन्होंने अपने लबादे पहन रखे थे, और फिर दूसरे को धोया जा रहा था। तो उनके पास बस इतना ही था, गरीबी की शपथ। शुद्धता की शपथ, यह एक चिंतनशील आदेश था।

इसलिए, एक बार जब उन्होंने अपनी अंतिम प्रतिज्ञा कर ली तो उन्होंने अपने जीवन में फिर कभी किसी महिला को नहीं देखा। तो इसका मतलब था माँ और बहन। गरीबी, शुद्धता, आज्ञाकारिता, उन्हें मठ के मठाधीश की आज्ञाकारिता की शपथ दिलाई गई, पूर्ण आज्ञाकारिता, और वे एक मौन आदेश हैं।

इसलिए, वे एक चिंतनशील आदेश हैं। इसलिए, एक बार जब वे अपनी अंतिम प्रतिज्ञा लेते हैं, तो वे अपने जीवन के लिए मौन व्रत लेते हैं। अब, तकनीकी रूप से, आप ट्रैपिस्टों के साथ कह सकते हैं कि मौन की मांग नहीं की गई थी, लेकिन यह आदेश के लिए महत्वपूर्ण था।

तो, आप इसे चौथा व्रत कहेंगे या नहीं, मुझे यकीन नहीं है। लेकिन वे मौन जीवन जीते थे, और उनके पास दिन में सात पहर होते थे, जिसके दौरान वे महान ग्रेगोरियन मंत्र गाते थे ताकि वे अपनी स्वर तंत्रिकाओं को न खो दें। लेकिन वे जीते थे। इसके अलावा, उनका जीवन मौन था।

और चुपचाप, वे पूरे दिन भगवान का चिंतन करते थे, जबकि वे अपने काम और अन्य काम करते थे। वैसे, हमने सोचा कि जब हम जा रहे थे, तो उस अनुभव में, हमें इस बारे में कुछ भी पता नहीं था, लेकिन हमने सोचा कि हम कुछ ढूँढ़ लेंगे, और यह एक बहुत ही, जो उन्होंने बनाया था वह एक बहुत ही गॉथिक मध्ययुगीन दिखने वाला मठ था। मेरा मतलब है, ऐसा लग रहा था कि आप मध्ययुगीन दुनिया में फ्रांस या जर्मनी में वापस जा रहे हैं।

हमने सोचा था कि हम कुछ बूढ़े लोगों को देखेंगे, लेकिन ऐसा नहीं था; कुछ लोग थे, लेकिन उनमें से बहुत से युवा थे जिन्होंने अंतिम प्रतिज्ञा ली थी। तो उनमें से बहुत से पुरुष थे, जिनकी उम्र केवल 21, 22 और 23 वर्ष थी। उन्होंने पहले ही अपनी अंतिम प्रतिज्ञा ले ली थी।

उनके पास तीन साल का नवप्रवर्तन है, और वे जीवन भर वहीं रहे। वे अपने जीवन के बाकी समय तक इसी क्रम में रहे। उन्हें वहीं जमीन पर दफनाया गया है।

इसलिए, उन्होंने मठवासी व्यवस्था को मसीह और संस्कृति के बीच विरोध के उदाहरण के रूप में देखा। तो यह एक उदाहरण है। अब मैं दूसरा उदाहरण इस्तेमाल करने जा रहा हूँ जिसका उन्होंने उल्लेख नहीं किया, उन्होंने इसका उल्लेख किया होगा, लेकिन मैं अमेरिकी कट्टरवाद का उपयोग करने जा रहा हूँ।

अब, यही वह बात है जो हम अपने अगले व्याख्यान में जानेंगे। लेकिन अमेरिकी कट्टरपंथ, आप कुछ अमेरिकी कट्टरपंथियों के बीच में आ सकते हैं, जैसा कि हम कट्टरपंथ के इतिहास का अध्ययन करते समय देखेंगे, आप मसीह और संस्कृति की मानसिकता के बीच विरोध पा सकते

हैं जहाँ संस्कृति पूरी तरह से गिर चुकी है, और इसलिए, आपको इससे कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए या कम से कम जितना संभव हो उतना कम होना चाहिए। यह सिर्फ आपका चर्च जीवन है।

आप चर्च जीवन समुदाय के एक समुदाय में बने हैं। और इसलिए अमेरिकी कट्टरपंथी आंदोलन, इसका कुछ हिस्सा मसीह और संस्कृति के बीच विरोध में एक आंदोलन हो सकता है। यदि आप किसी भी तरह के अमेरिकी कट्टरपंथ में पले-बढ़े हैं, तो आपको पता होगा कि आपके पालन-पोषण के मामले में बहुत सारे नियम और विनियम, बहुत सारे क्या करें और क्या न करें थे, क्योंकि वे आपको उस पतित संस्कृति से दूर रखने की कोशिश कर रहे थे, कि आप उस संस्कृति के साथ कोई निष्ठा नहीं चाहते हैं।

तो, ठीक है। तो ये दो उदाहरण हैं। अब, वह क्या करता है, मेरा मतलब है, मसीह और संस्कृति के बीच विरोध के दो उदाहरण हैं।

ठीक है। अब वह इनमें से प्रत्येक के साथ जो करता है वह यह है कि वह इसे एक आवश्यक स्थिति के रूप में देखता है लेकिन एक अपर्याप्त स्थिति के रूप में। इसलिए वह मसीह और संस्कृति के बीच विरोध के साथ ऐसा ही करता है।

तो, सिक्के के दो पहलू हैं। नीबूर कहते हैं कि यह एक आवश्यक स्थिति है। अब, यह एक आवश्यक स्थिति क्यों है? यह एक आवश्यक स्थिति है क्योंकि यह ईसाइयों को परम निष्ठा की याद दिलाती है।

जीवन में आपकी अंतिम वफ़ादारी क्या है? जीवन में आपकी पूर्ण वफ़ादारी क्या है? यह किसी संस्कृति के प्रति नहीं है। यह मसीह और सिर्फ मसीह के प्रति है। यह प्रभु के रूप में यीशु और उनके राज्य के प्रति है।

यह आपकी पूर्ण निष्ठा है। वह कहते हैं कि यह एक आवश्यक स्थिति है क्योंकि यह हमें पूर्ण निष्ठा की याद दिलाती है। साथ ही, वह कहते हैं कि यह एक आवश्यक स्थिति है क्योंकि वह हमें याद दिलाते हैं कि संस्कृति अक्सर यीशु की शिक्षाओं के विपरीत समझौता करती है।

और इसके द्वारा किए जाने वाले कुछ समझौते बहुत ही घिनौने समझौते हो सकते हैं जो राज्य के मूल्यों और राज्य के जीवन के बिल्कुल विपरीत हैं। और, कभी-कभी, जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह एक तरह से घिनौनी दुनिया है, जहाँ जीवन के प्रति अत्यधिक प्रेम या यहाँ तक कि मृत्यु का अत्यधिक भय है। लेकिन यह ऐसे समझौते कर सकता है जो ईसाइयों का अवमूल्यन कर सकते हैं यदि वे उन समझौतों के आगे झुक जाते हैं।

इसलिए, वे इसे एक आवश्यक स्थिति कहते हैं। लेकिन फिर वे कहते हैं कि यह पर्याप्त है, यह अपर्याप्त स्थिति है। यह आवश्यक है।

हमें यह करना ही होगा। हमें खुशी है कि ऐसे लोग हैं, लेकिन यह एक अपर्याप्त स्थिति है। ठीक है।

अब, यह अपर्याप्त स्थिति क्यों है? हम इस स्थिति के साथ नहीं चल सकते। यह अपर्याप्त है क्योंकि मनुष्य सांस्कृतिक प्राणी हैं। हम इस तथ्य से सांस्कृतिक हैं कि हम समुदायों में रहते हैं, और हम उस संस्कृति के प्राणी हैं।

और जो हम नहीं जानते, शायद जो हम नहीं जानते, वह यह है कि यीशु पूरी दुनिया के प्रभु हैं, जिसमें सभी संस्कृतियाँ भी शामिल हैं। तो, जो होता है वह यह है कि जो लोग मसीह और संस्कृति के विपरीत दृष्टिकोण रखते हैं, उन्हें यह एहसास नहीं होता कि वे अपनी संस्कृति बना रहे हैं। इसलिए, वे एक संस्कृति बना रहे हैं।

तो, आप ऐसा नहीं कर सकते। हम बहुत ही सांस्कृतिक प्राणी हैं, इस तथ्य से कि हम समुदायों में रहते हैं। और इसलिए, हम अपनी खुद की संस्कृतियाँ बनाते हैं। और सवाल यह है कि क्या हम उन संस्कृतियों के प्रति वफ़ादारी रखते हैं या नहीं? और हम अपनी बनाई हुई संस्कृतियों को संरक्षित करने की कोशिश में बहुत समय लगाते हैं।

तो, हर कोई एक सांस्कृतिक प्राणी है। अब, चलिए एक पल के लिए मठवाद को लेते हैं। मठवाद जिसे हमने शुरुआती चर्च में देखा था, दूसरी शताब्दी और तीसरी शताब्दी में, इस तरह विकसित हुआ कि जब आप मध्ययुगीन दुनिया में पहुँचते हैं, तो मठवाद का मध्ययुगीन दुनिया में व्यापक संस्कृति से क्या संबंध है? वह संबंध क्या है? यह उस व्यापक संस्कृति को नियंत्रित कर रहा है।

मठवाद कला का स्थान था। मठवाद वास्तुकला का स्थान था। मठवाद भाषा का स्थान था।

मठवाद सीखने का स्थान था। मठवाद ने ही मध्ययुगीन दुनिया में पश्चिमी संस्कृति को नियंत्रित किया। इसलिए, जिस संस्कृति को उसने शुरू में तिरस्कृत किया होगा, उसने पाया कि वह उस संस्कृति का नियंत्रक कारक था।

और निश्चित रूप से, तब आपके पास इसके खिलाफ़ प्रतिक्रियाएँ होंगी, जैसे कि फ्रांसिस्कन कहते हैं, नहीं, हम बहुत आगे निकल गए हैं। चलो पीछे हटते हैं और आगे बढ़ते हैं। इसलिए, कट्टरवाद निश्चित रूप से अपनी संस्कृति भी बनाता है।

तो, मैं यहाँ आए एक रब्बी से बात कर रहा था; यह आखिरी सेमेस्टर था, और मुझे लगता है कि वह आखिरी सेमेस्टर था। मुझे उनके साथ, मार्व और अन्य लोगों के साथ डिनर पर जाने का मौका मिला। लेकिन हम हसीदिक यहूदियों और उनकी संस्कृति के बारे में बात कर रहे थे।

और वह एक यहूदी है, एक अमेरिकी यहूदी के रूप में, शायद सुधारवादी परंपरा में। वह हसीदिक यहूदियों को देखता है, बहुत कट्टरपंथी, अपने पहनावे और सामुदायिक जीवन और हर चीज में बहुत सावधान। और एक यहूदी के रूप में, वह हसीदिक यहूदियों को अजीब, अति-रूढ़िवादी यहूदियों के रूप में देखता है, एक अमेरिकी यहूदी के रूप में, एक अमेरिकी सुधारवादी यहूदी के रूप में उसके लिए एक अजीब समूह है।

लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, उन्होंने कहा, हालांकि, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि अगर आज से पांच या 600 साल बाद यहूदी धर्म जीवित है, तो यह उन लोगों की बदौलत होगा। उन लोगों ने यहूदी धर्म और यहूदी धर्म के सार को जीवित रखा है। अमेरिकी यहूदी, सुधारवादी यहूदी, और इसी तरह, वे बहुत अमेरिकीकृत हो गए हैं, संस्कृति का बहुत हिस्सा बन गए हैं, और इसी तरह।

तो, यह ज़रूरी है, लेकिन यह अपर्याप्त है, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, तो ये मसीह और संस्कृति के बीच दो विरोध हैं। नंबर तीन विपरीत है।

यह मसीह और संस्कृति का संश्लेषण है, नंबर तीन। यह आपकी रूपरेखा के पृष्ठ 16 पर है। मसीह और संस्कृति का संश्लेषण।

ठीक है, तो मसीह और संस्कृति के इस संश्लेषण में, मसीह और दुनिया के बीच कोई तनाव नहीं है। मसीह और दुनिया के बीच बिल्कुल भी कोई तनाव नहीं है। ये लोग मसीह और संस्कृति में समान रूप से घर पर हैं।

वे इसमें कोई तनाव नहीं देखते। इसलिए, सुसमाचार और सामाजिक कानून, सुसमाचार कानून और सामाजिक कानून एक दूसरे के साथ खूबसूरती से सामंजस्य में हैं। ईश्वरीय कृपा और मानवीय प्रयास एक दूसरे के साथ खूबसूरती से सामंजस्य में हैं।

ईश्वर की कृपा और हमारे मानवीय प्रयास के बीच सामंजस्य है। मोक्ष की नैतिकता और प्रगति की नैतिकता। मोक्ष की नैतिकता और प्रगति की नैतिकता एक दूसरे के साथ खूबसूरती से सामंजस्य में हैं।

इस तरह की चीज़ों के बीच कोई तनाव नहीं है। उन्हें उनके बीच कोई अंतर नज़र नहीं आता। अब, वे जो करते हैं, और हम इसे उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद के साथ पहले ही देख चुके हैं, वे जो करते हैं वह यह है कि वे यीशु और उनकी शिक्षाओं को इस दृष्टिकोण के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं।

यीशु और उनकी शिक्षाएँ इस उदार दृष्टिकोण के लिए मार्गदर्शक हैं कि वे एक अच्छे नैतिक शिक्षक हैं, वे एक अच्छे नैतिक व्यक्ति हैं, और वे एक नैतिक व्यक्ति हैं जिनका अनुकरण किया जाना चाहिए। इसलिए यीशु संस्कृति में घर जैसा, दुनिया में घर जैसा, लेकिन ईश्वर के साथ घर जैसा एक आदर्श व्यक्ति है। और वे इस तरह के घर जैसा होने के लिए एक आदर्श मॉडल हैं।

ठीक है, जहाँ तक उनका सवाल है, संस्कृति का लक्ष्य शांति है। यह एक शांतिपूर्ण, सहयोगात्मक मानवीय अस्तित्व है। यही संस्कृति का लक्ष्य है।

जहाँ तक उनका सवाल है, सभी संस्कृतियों को उस लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए। अब, यह एक संस्कृति है। हालाँकि, संस्कृति के इस दृष्टिकोण से, इस संस्कृति का सामाजिक रूप से निर्माण किया जा सकता है। हम इस संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं, और हम मनुष्य शालोम की इस संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं।

हम ऐसा कर सकते हैं। हमारे पास ऐसा करने के लिए साधन हैं; हमारे पास ऐसा करने की स्वतंत्रता है, और हमारे पास ऐसा करने के लिए नैतिक आदेश हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है।

हमें ऐसी संस्कृति बनाने में मदद के लिए परमेश्वर की भाषा के राज्य की ज़रूरत नहीं है जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो। हम ऐसा करने में सक्षम हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

इसलिए, क्योंकि हमारे पास ऐसा करने की क्षमता है, सभी संस्कृतियों और धर्मों का इस बातचीत में शामिल होने का स्वागत है। यह एक बहु-कट, दूसरा समूह है, जो मसीह और संस्कृति का संश्लेषण है। यह एक बहुसांस्कृतिक प्रयास है, और यह एक बहु-धार्मिक प्रयास है।

इसलिए, किसी भी संस्कृति के आधार पर किसी भी तरह का निर्णय नहीं लिया जाता है। किसी भी धर्म पर कोई निर्णय नहीं लिया जाता है, और यहाँ एक सुंदर संश्लेषण है, दोनों का एक सुंदर सामंजस्य है। इसलिए, हम इसे मसीह और संस्कृति का संश्लेषण कहते हैं।

ठीक है, अब, इसके दो उदाहरण हैं, और हमने अपने पाठ्यक्रम में दोनों उदाहरण देखे हैं। लेकिन इसके दो उदाहरण, पहला देववाद होगा और देववाद के उदाहरण का उपयोग करता है। तो सबसे पहले, अब हम देववाद के बारे में काफी कुछ जानते हैं।

तो पहला होगा 18वीं सदी का ईश्वरवाद, थॉमस जेफरसन। हमने अभी जिन आदर्शों के बारे में बात की है, वे निश्चित रूप से थॉमस जेफरसन के आदर्श थे। और दूसरा वह होगा जिसे हम शास्त्रीय उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद कहते हैं, 19वीं सदी का प्रोटेस्टेंटवाद, 20वीं सदी से 21वीं सदी तक, शास्त्रीय उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद।

जैसा कि मैंने पहले कोर्स में बताया था, जब हम न्यूयॉर्क शहर में थे, तो मैं छात्रों को जडसन मेमोरियल चर्च ले जाता था। और हंटर, जब आप कैमरे के पास से गुजरें तो झुकें, क्या आप झुकेंगे? तो यह बढ़िया है, ठीक है, अच्छा है, ठीक है। हम लोगों को जडसन मेमोरियल चर्च ले जाते थे, जो कि हम जिस बारे में बात कर रहे हैं उसका एक बहुत ही दिलचस्प उदाहरण था।

और हमने एक रविवार का ज़िक्र किया, उपदेशक वॉल्ट डिज़्नी धर्म पर उपदेश दे रहे थे, इसलिए उस रविवार के भजन मिकी माउस और डेवी क्रॉकेट जैसे थे, और वॉल्ट डिज़्नी के सभी गाने उस दिन के भजन थे। भोज में कोका-कोला और आलू के चिप्स थे। और एक दिन, दूसरे रविवार को, वह स्वास्थ्य पर उपदेश दे रहे थे।

और इसलिए, आराधना के लिए आह्वान, आपको नहीं पता था कि आराधना के लिए आह्वान क्या होने वाला था। आप इस बारे में सोचते हुए बैठे रहे कि इसे क्या कहा जाता है। आराधना के लिए आह्वान एक टम्बलिंग टीम थी। उन्होंने अपनी चटाईयाँ निकालीं और उन्हें चर्च के बीच में रख दिया, और वे इधर-उधर टम्बलिंग कर रहे थे और सब कुछ कर रहे थे।

और वह आराधना के लिए आह्वान था, टम्बलिंग टीम आराधना के लिए अपना काम कर रही थी। इसलिए, सभी संस्कृतियाँ और संस्कृति की सभी अभिव्यक्तियाँ समान रूप से मान्य हैं, और यह

बहुत दिलचस्प है। चर्च के बारे में मैं एक बात कहूँगा कि आप कभी नहीं जानते कि आपको क्या मिलने वाला है।

और यही कारण है कि लड़के, आप बड़ी उत्सुकता के साथ उस चर्च में जाते हैं। आप हमेशा सोचते हैं कि आज क्या होने वाला है। कौन जानता है? यह एक बहुत ही दिलचस्प अनुभव था। तो ये दो उदाहरण हैं।

ठीक है। तो फिर इस दूसरे उदाहरण के बारे में वह क्या कहते हैं? इस दूसरे उदाहरण के बारे में वह जो कहते हैं वह यह है कि यह एक आवश्यक स्थिति है। वह कहते हैं कि यह एक आवश्यक स्थिति है।

ठीक है। और यह एक आवश्यक स्थिति क्यों है? यह एक आवश्यक स्थिति है क्योंकि आप मसीह को किसी भी संस्कृति से नहीं जोड़ सकते। आप मसीह को किसी भी संस्कृति में नहीं बांध सकते।

वह पूरी मानवता का निर्माता है, और इसलिए, यह मनुष्य ही है जो संस्कृति का निर्माण करता है, इसलिए, आप उसे किसी भी संस्कृति से नहीं जोड़ सकते। यदि आप उसे किसी संस्कृति से जोड़ने जा रहे हैं, तो आप उसे निश्चित रूप से मध्य पूर्वी संस्कृति के साथ यीशु के रूप में जोड़ेंगे, मसीह के रूप में नहीं क्योंकि मसीह हमेशा से था, मसीह हमेशा रहेगा, लेकिन चूंकि यीशु एक विशेष संस्कृति में इस दुनिया में आया था, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, यह एक आवश्यक स्थिति है।

नीबुहर का यह भी कहना है कि यह एक आवश्यक पद है क्योंकि जो लोग इस पद पर हैं, क्योंकि वे अपनी संस्कृति में सहज हैं, वे ईसाई धर्म के सांस्कृतिक तिरस्कार करने वालों से बात करने में सक्षम हैं। वे ऐसा करने में सक्षम हैं। यह श्लेयरमाकर की तरह है। वे ईसाई धर्म के सांस्कृतिक तिरस्कार करने वालों को संबोधित करने में सक्षम हैं और उन्हें दिखा सकते हैं कि वे कहाँ गलत हो गए हैं। इसलिए, उन्हें एक तरह से सांस्कृतिक अभिजात वर्ग की सेवा करने के लिए बुलाया जाता है क्योंकि वे संस्कृति में घर जैसा महसूस करते हैं।

वे उस संस्कृति में मसीह और ईसाई धर्म की आलोचना करने वाले लोगों की सेवा कर सकते हैं क्योंकि वे उनके स्तर पर काम कर रहे हैं। इसलिए, उनका कहना है कि यह एक आवश्यक पद है। हमें श्लेयरमाकर जैसे लोगों की ज़रूरत है जो जीवन में सांस्कृतिक अभिजात वर्ग की सेवा कर सकें।

लेकिन वह यह भी कहते हैं कि यह एक अपर्याप्त स्थिति है। और वह कहते हैं कि यह एक अपर्याप्त स्थिति है क्योंकि यह, मुझे खेद है, यह एक अपर्याप्त स्थिति है क्योंकि यह यह देखने में विफल है कि सुसमाचार का आह्वान कितना क्रांतिकारी है। सुसमाचार का आह्वान दो निष्ठाओं की अनुमति नहीं देता: मसीह और संस्कृति और संश्लेषण।

सुसमाचार का आह्वान कभी भी ऐसा करने की अनुमति नहीं देता। क्यों? क्योंकि संस्कृतियाँ स्वाभाविक रूप से पापी होती हैं। और यहाँ आप न्यू यॉर्क, बार्थ और नीबहर को आते हुए सुन सकते हैं।

संस्कृतियाँ स्वाभाविक रूप से पापी होती हैं क्योंकि वे पापी लोगों द्वारा बनाई जाती हैं। इसलिए, सभी संस्कृतियों में उस तरह का पाप होता है। और समस्या यह है कि उस संस्कृति के लोग इसे पहचान नहीं पाते।

और वे अपनी संस्कृति को ईश्वर की इच्छा से जोड़ते हैं। और वे उस संस्कृति के निर्माण में पाप को नहीं पहचानते। इसलिए, यह एक आवश्यक स्थिति है, लेकिन यह एक अपर्याप्त स्थिति है क्योंकि यह दुनिया में पाप या बुराई को नहीं पहचानती है।

और अगर आप यह कहने जा रहे हैं कि सभी संस्कृतियाँ समान रूप से योग्य हैं, सभी संस्कृतियाँ, यहाँ एक अद्भुत संश्लेषण है। अगर आप ऐसा कहने जा रहे हैं, तो आप नाज़ियों पर क्या निर्णय लाने जा रहे हैं? आप नाज़ी संस्कृति पर क्या निर्णय लाने जा रहे हैं, जिसने 11 मिलियन लोगों को खत्म कर दिया और भयानक रूप से कत्लेआम किया? क्या आप उस संस्कृति पर कोई निर्णय लेने जा रहे हैं? अगर सभी संस्कृतियाँ समान रूप से योग्य हैं, अगर सभी संस्कृतियाँ, अगर सभी संस्कृतियों के साथ मसीह का संश्लेषण है, तो क्या आप पीछे हटकर यह कहेंगे कि हमें किसी भी संस्कृति पर निर्णय नहीं लेना चाहिए? तो वैसे भी, जहाँ तक उनका सवाल है, यह एक अपर्याप्त स्थिति है। ठीक है, नंबर तीन, या यह वास्तव में आपकी रूपरेखा में नंबर चार है, लेकिन नंबर चार मसीह और संस्कृति का इरादा है।

क्राइस्ट और सांस्कृतिक इरादे बीच के रास्ते का प्रतिनिधित्व करते हैं, तीन मध्यम मॉडल जो उनके पास हैं। मैंने जो किया है वह यह है कि मैंने उन मध्यम मॉडलों को लिया है और फिर उन्हें यहाँ एक साथ रखा है। तो, ठीक है, अब यह है, जहाँ तक नीबूर का सवाल है, मध्य मार्ग, लेकिन कठिन रास्ता।

मध्य मॉडल, अब हम इसके बारे में बात करने जा रहे हैं जैसे कि यह एक मॉडल है, मसीह और संस्कृति का इरादा। मध्य मॉडल कठिन मॉडल है। यह कठिन रास्ता है।

और यह कठिन रास्ता है क्योंकि आपको किसी तरह से मसीह और संस्कृति के बीच सामंजस्य बिठाना होगा। आपको मसीह और संस्कृति के बीच तनाव को समझना होगा, और आपको किसी तरह से मसीह और संस्कृति के बीच सामंजस्य बिठाना होगा। तो अब ये लोग हमें याद दिलाते हैं कि यीशु मसीह सभी का प्रभु है, जिसका अर्थ है कि वह इस जीवन में होने वाली सभी चीज़ों का प्रभु है, जिसमें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति भी शामिल है।

जिस प्राकृतिक दुनिया पर हम संस्कृति बनाते हैं, उस प्राकृतिक दुनिया को मसीह ने सृष्टि के समय बनाया था। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को बनाया गया था। और इसलिए, जिस प्राकृतिक दुनिया पर हम संस्कृति बनाते हैं, वह प्राकृतिक दुनिया स्वाभाविक रूप से अच्छी है।

यह स्वाभाविक रूप से बुरा नहीं है। और इसे स्वयं ईश्वर ने अच्छा घोषित किया है। तो वह प्राकृतिक दुनिया।

अब, दूसरी ओर, हम मानते हैं कि जब हम किसी संस्कृति को थोपते हैं और उसे आकार देते हैं, तो वह संस्कृति अक्सर बुरी होती है। और हम इसे पहचानते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद, और यहाँ आप इसे गॉर्डन कॉलेज में भी सुनते हैं, लेकिन इन सबके बावजूद, सभी सत्य ईश्वर का सत्य है।

इसलिए, इस तथ्य के बावजूद कि संस्कृति के निर्माण में बुराई है, इसके बावजूद, सभी सत्य ईश्वर का सत्य है। दूसरे शब्दों में, जहाँ भी आपको सत्य मिलता है, वह ईश्वर से आता है। जहाँ भी आप सत्य देखते हैं।

तो, अगर कोई वैज्ञानिक सत्य है, तो वह कहाँ से आता है? वह ईश्वर से आता है। अगर कोई दार्शनिक सत्य है, तो वह ईश्वर से आता है। अगर कोई गणितीय सत्य है, तो वह ईश्वर ही है जिसने हमें दिया है।

धार्मिक सत्य ईश्वर से आता है। इसलिए, सभी सत्य ईश्वर का सत्य है। इसलिए, यदि यह कथन सत्य है, तो ईसाई उस संस्कृति की सेवा करने में आज्ञाकारी होना चाहते हैं जहाँ उन्हें सत्य मिलता है।

और जैसा कि नीबूर कहते हैं, आज्ञाकारिता अमूर्त रूप में नहीं होती। आज्ञाकारिता रोज़मर्रा की ज़िंदगी में होती है, उस दुनिया की सेवा करने में जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा है, और जहाँ भी हमें सत्य मिलता है, वहाँ ईमानदारी से करने में होती है। और इसलिए, उनके लिए, यह एक तरह से पाप पर अनुग्रह की जीत है।

जहाँ तक उनका सवाल है, जैसा कि वे इस बात को स्पष्ट करते हैं, क्योंकि सभी सत्य ईश्वर के सत्य हैं, और क्योंकि सभी सत्य ईश्वर के सत्य हैं, जहाँ भी आप सत्य पाते हैं, वह ईश्वर से ही है। वैज्ञानिक सत्य, गणितीय सत्य, दार्शनिक सत्य, कलात्मक सत्य। यदि आप यह दावा कर सकते हैं कि यह सत्य है, तो आप देखेंगे कि ईश्वर ही इसका रचयिता है।

फिर वे कहते हैं कि ईसाईयों का आह्वान कोई अमूर्त आह्वान नहीं है। हमें ईसाई कहा जाता है और हमें उस संस्कृति में काम करने के लिए बुलाया जाता है जिसमें परमेश्वर ने हमें रखा है। और उसने हमें अलग-अलग संस्कृतियों में रखा है।

लेकिन ईश्वर ने हमें संस्कृति में काम करने के लिए रखा है, ताकि हम यह पता लगा सकें कि उस संस्कृति में सच्चाई कहाँ है, और उस सच्चाई को अपना सकें। और फिर उस सच्चाई के लिए सुसमाचार की सच्चाई भी बोलें। तो, एक काम करना है।

इसलिए, वह जो कहता है वह यह है कि आज्ञाकारिता अमूर्त रूप में प्रस्तुत नहीं की जाती है। जब मसीह हमें आज्ञा मानने के लिए बुलाता है, तो यह कोई अमूर्त सिद्धांत नहीं है। यह रोज़मर्रा की दुनिया में आज्ञाकारिता के लिए एक आह्वान है।

तो, क्या इससे मदद मिलती है? यही वह है जिसके लिए वह हमें बुला रहा है। हम यहाँ दो उदाहरणों का उपयोग करने जा रहे हैं। एक उदाहरण सेंट थॉमस का है।

इसलिए, सेंट थॉमस एक्विनास को सेंट थॉमस से बहुत मदद मिलती है। क्योंकि सेंट थॉमस धर्मशास्त्र और दर्शन को जोड़ने में सक्षम थे। सेंट थॉमस वास्तविकता के निर्माण को देखने में सक्षम थे जैसा कि हम धर्मशास्त्रीय और दार्शनिक रूप से देखते हैं।

इसलिए, सेंट थॉमस इस तरह का इरादा रखने में सक्षम थे। और जहाँ तक सेंट थॉमस का सवाल है, इस दुनिया में तर्क करने की हमारी क्षमता इसका एक उत्पाद है; यह ईश्वर की ओर से एक उपहार है। इसलिए, हम संस्कृति के हर क्षेत्र में उस तर्क का उपयोग करते हैं जिसमें ईसाई रहते हैं और काम करते हैं।

यह ईश्वर की ओर से एक उपहार है। और यह राजनीतिक रूप से या सामाजिक रूप से अपने आप काम करता है। यह कलात्मक रूप से अपने आप काम करता है।

यह कई तरह से काम करता है क्योंकि लोग अपनी संस्कृति की सेवा करते हैं। तो, संस्कृति ईश्वर प्रदत्त प्रकृति में ईश्वर प्रदत्त तर्क का कार्य है। इसलिए, सेंट थॉमस, उनके लिए, यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था।

जब आप अमेरिका में बहुत से कैथोलिक विश्वविद्यालयों, जैसे बोस्टन कॉलेज या नोट्रे डेम को देखते हैं, तो उनका शिक्षा का दर्शन क्या है? वे अपने शिक्षा के दर्शन को किस तरह से व्यक्त करते हैं? खैर, वे इसे अक्सर इस तरह की भाषा में व्यक्त करते हैं। यह वह भाषा है जिसका वे उपयोग करते हैं। ईश्वर ने हमें इस संस्थान में पढ़ाए जाने वाले हर क्षेत्र में सोचने का कारण दिया है।

यह कैथोलिक तर्क का तरीका है, इस बारे में सोचना कि भगवान ने हमें यहाँ क्यों रखा है और हम जो कुछ भी पढ़ते हैं उसमें उनकी कृपा कैसे स्पष्ट है, इत्यादि। तो, दूसरा अच्छा उदाहरण, और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं भूल गया कि उन्होंने इस उदाहरण का इस्तेमाल किया था या नहीं, लेकिन दूसरा अच्छा उदाहरण डायोग्रेटस को लिखा गया पत्र है। यह दूसरी शताब्दी की बात है।

अगर आपको इसकी ज़रूरत है तो मैंने यहाँ इसकी वर्तनी बता दी है। लेकिन दूसरी सदी में डायोग्रेटस को लिखा गया पत्र, वास्तव में उस तनाव का खूबसूरती से उदाहरण है जिसमें हम रह रहे हैं। इसलिए, मैं डायोग्रेटस को लिखे गए पत्र से एक पैराग्राफ पढ़ने के लिए बस एक मिनट का समय लेने जा रहा हूँ।

क्या आप में से किसी ने संयोग से किसी कोर्स के लिए वह पत्र पढ़ा है? यह एक बेहतरीन पत्र है। इसलिए, यदि आप इस तरह का अर्थ समझना चाहते हैं, तो मैं यहाँ एक पैराग्राफ पढ़ने के लिए एक मिनट का समय लेने जा रहा हूँ। और यह इस बात का उदाहरण है कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं, यहाँ मध्य मार्ग।

ईसाईयों को देश, भाषा या रीति-रिवाजों के आधार पर दूसरे लोगों से अलग नहीं किया जाता। आप देखिए, वे अपने खुद के शहरों में नहीं रहते, कोई अजीब बोली नहीं बोलते, या कोई अजीब जीवनशैली नहीं अपनाते। उनकी यह शिक्षा जिज्ञासु लोगों के आविष्कार और अटकलों से नहीं गढ़ी गई है, न ही वे कुछ लोगों की तरह केवल मानवीय शिक्षा का प्रचार कर रहे हैं।

वे ग्रीक और विदेशी शहरों में रहते हैं, जहाँ भी उन्हें मौका मिला है। वे कपड़े, भोजन और जीवन के अन्य पहलुओं में स्थानीय रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। लेकिन साथ ही, वे हमें अपनी नागरिकता का अद्भुत और निश्चित रूप से असामान्य रूप दिखाते हैं।

वे अपनी मूल भूमि पर रहते हैं, लेकिन विदेशी की तरह। नागरिक के रूप में, वे सभी चीजों को दूसरों के साथ साझा करते हैं, लेकिन विदेशियों की तरह, वे सभी चीजों को भुगतते हैं। हर विदेशी देश उनके लिए उनका मूल देश है, और हर मूल भूमि एक विदेशी देश है।

वे भी बाकी लोगों की तरह ही शादी करते हैं और बच्चे पैदा करते हैं, लेकिन वे अनचाहे बच्चों को नहीं मारते। वे एक साझा मेज देते हैं, लेकिन एक साझा बिस्तर नहीं। वे वर्तमान में शरीर में हैं, लेकिन वे शरीर के अनुसार नहीं जीते हैं।

वे धरती पर अपने दिन गुजार रहे हैं लेकिन स्वर्ग के नागरिक हैं। वे नियुक्त कानूनों का पालन करते हैं और अपने जीवन में कानूनों से परे जाते हैं। वे सभी से प्यार करते हैं लेकिन सभी द्वारा सताए जाते हैं।

वे अज्ञात और निंदित हैं। उन्हें मृत्युदंड दिया जाता है और फिर भी वे जीवन प्राप्त करते हैं। वे गरीब हैं, फिर भी वे कई लोगों को अमीर बनाते हैं।

उनके पास हर चीज़ की कमी है, फिर भी उनके पास हर चीज़ बहुतायत में है। वे अपमानित होते हैं, फिर भी अपमान के ज़रिए महिमा प्राप्त करते हैं। उनके नाम पर कालिख पोत दी जाती है, फिर भी वे निर्दोष साबित होते हैं।

उनका मज़ाक उड़ाया जाता है और बदले में उन्हें आशीर्वाद दिया जाता है। उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया जाता है और वे दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं। जब वे अच्छा करते हैं, तो उन्हें बुरे लोगों के रूप में दंडित किया जाता है।

जब उन्हें सज़ा दी जाती है, तो वे ऐसे खुश होते हैं जैसे उन्हें नया जीवन दिया गया हो। यहूदियों द्वारा उन पर हमला किया जाता है क्योंकि वे उन्हें विदेशी मानते हैं और यूनानियों द्वारा उन्हें सताया जाता है, फिर भी जो लोग उनसे नफरत करते हैं, वे अपनी दुश्मनी का कोई कारण नहीं बता पाते। सरल शब्दों में कहें तो आत्मा शरीर के लिए है, जैसे ईसाई दुनिया के लिए हैं।

आत्मा शरीर के सभी भागों में फैली हुई है, और ईसाई इसे दुनिया के सभी शहरों में फैलाते हैं। आत्मा शरीर में है, लेकिन यह शरीर की नहीं है। ईसाई दुनिया में हैं, लेकिन दुनिया के नहीं हैं।

तो, डायोग्रेटस को लिखा गया पत्र। कभी गूगल पर खोजें। पूरा पत्र पढ़ें।

अभी नहीं, भगवान आपका भला करे, लेकिन कभी गूगल पर जाकर डायोग्रेटस को लिखा पूरा पत्र पढ़ें। यह इस तरह के मध्यमार्ग का एक सुंदर उदाहरण है। ठीक है।

अब, नीबूर इस मध्य मार्ग के साथ क्या करते हैं? नीबूर यहीं अपनी निष्ठा रखते हैं। इसलिए, वे इसे अपर्याप्त नहीं बल्कि एक आवश्यक स्थिति कहते हैं। जहाँ तक नीबूर का सवाल है, आप देखेंगे कि वे इस मध्य मार्ग की आलोचना नहीं करते क्योंकि नीबूर वास्तव में सोचते हैं कि हम तनाव में जीवन जीते हैं।

हम स्वर्ग के नागरिक हैं। हम पृथ्वी के नागरिक हैं। उनका मानना है कि ईसाइयों को मठ की आसान जगह की ओर नहीं भागना चाहिए, लेकिन दूसरी ओर, उन्हें प्रोटेस्टेंट उदारवाद की शरण नहीं लेनी चाहिए, जो मूल रूप से दिवालिया है।

इसलिए, वह इस मध्य मार्ग पर चलने जा रहा है। हम मसीह और संस्कृति के बीच तनाव में रहते हैं। इसलिए, नीबूर के लिए, मध्य मार्ग कहता है कि हमारी निष्ठा दोनों के प्रति है।

यह मसीह के लिए भी है और यह उस संस्कृति के लिए भी है जिसमें हम ईश्वर की कृपा से काम करते हैं। इसलिए, वह बीच के रास्ते में उस तरह की आलोचना नहीं करने जा रहा है जैसा वह दूसरों के लिए करता है। ठीक है।

मसीह और संस्कृति। इस गर्मी में आप इस किताब को पढ़ने से भी बुरा कुछ नहीं कर सकते। आपके दिलों को आशीर्वाद मिले।

तो, इसे अपनी पढ़ने की सूची में शामिल करें। यह बहुत बढ़िया है। लेकिन बस कुछ मिनटों के लिए, क्या हमारे पास विरोध, संश्लेषण और तनाव के बारे में कोई सवाल है? कोई सवाल? हाँ।

मैंने उन सभी को यहाँ डाला है, और वे एक जैसे ही हैं। मुझे देखना होगा और बस खुद को याद दिलाना होगा। क्या आपका मतलब उनका सटीक शीर्षक है? मुझे सुनिश्चित करने के लिए उसे देखना होगा।

मैं उन सभी को यहाँ एक साथ चिपका देता हूँ, और मुझे इसकी जाँच करनी होगी। लेकिन जब आप किताब पढ़ते हैं, तो यह देखना मुश्किल नहीं है कि नीबूर की खुद की निष्ठा कहाँ है। हालाँकि वह किताब के बारे में आम तौर पर बहुत निष्पक्ष है, आप देख सकते हैं कि वह यहाँ कहाँ आ रहा है।

मसीह और संस्कृति के बारे में कुछ और। ठीक है। बस एक शब्द इस बारे में कि हम जीवन में कहाँ जा रहे हैं।

बुधवार को, मैंने खुद को कट्टरवाद और इंजीलवाद के बारे में बात करने के लिए तीन या चार दिन दिए हैं क्योंकि यह वास्तव में एक व्यापक विषय है, और हमें इसके लिए कुछ समय चाहिए। इसलिए हम बुधवार को इसकी शुरुआत करेंगे। ठीक है।

आपके दिलों को आशीर्वाद मिले।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 23, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट, भाग 3 है।